

म् BHATT. 13, 10. उदतारिषुरभोधिम 33. उत्तीर्णजलधि ÇĀK. 192, v. l. तत्रे करे: — अङ्गि क्वेडुपं व्यसनमुत्तरं डुस्तराराम् BHĀG. P. 4, 22, 40. — 3) über Etwas hinüberkommen, glücklich überwinden: नरा डुकृतमुत्तरति HARIV. 14227. उत्तीर्णरोगविपद् KATHĀS. 17, 43. आयुरुत्तीर्णा: der sein Leben abgelebt hat HARIV. 114. — 6) aufgeben, verlassen: अज्ञातचर्यामुत्तीर्णान् MBh. 3, 2042. — 7) erheben, erhöhen, stärken, vermehren: तेषां अवांस्युत्तरि RV. 1, 11, 7. उत्ते शुष्मं तिरामसि 3, 37, 10. इन्द्र उदार्यं वर्षामतिरत् श्व दासं वर्षामकृन् ÇĀKĪH. Ç. 8, 25, 6. 10, 11, 22. VS. 11, 82. SV. II, 8, 2, 19, 2 vgl. mit AV. 6, 36, 2. — 8) उत्तीर्ण der seine Lehrjahre bestanden hat, seine Studien u. s. w. vollbracht hat, erfahren, geschickt: समात्तत्रतमुत्तीर्णं विद्धि मो लम् MBh. 4, 1408. — caus. 1) hinaussteigen lassen, hinausheifen, herausholen, hinauslassen: तां शोकसलिले मग्नमुत्तारयितुमर्हसि HARIV. 4405. कृपात् PĀNĪKĀT. ed. orn. 64, 1. fgg. सा वमस्माद्विलात्सर्वानुत्तारयितुमर्हसि R. 4, 32, 15. 17. तपान्यो ऽयमिति मवा धवलगृह्ण-डुत्तार्य मुक्तः PĀNĪKĀT. 128, 25. — 2) befreien, erlösen, retten: इमानि हि प्राणयन्ति सृजन्युत्तारयन्ति च MBh. 12, 9259. उत्तारयति संतत्या दश पूर्वा-न्दशापरान् 3, 8306. यस्माडुत्तारयति पापात् 5, 3921. यज्ञाडुत्तारयस्व माम् befreie mich vom Opfer (das wie eine Schuld auf mir liegt) R. GORR. 1, 43, 4. — 3) herabsteigen lassen, herabnehmen, abnehmen: (तम् स्कन्धा-डुत्तार्य PĀNĪKĀT. 187, 18. निजभरणान्युत्तार्य VET. 22, 3. — 4) Jmd über-setzen, hinüberbringen: ततस्वामेकाकिनो स्वपृष्ठमारोप्य सुखेनोत्तारयि-ष्यामि PĀNĪKĀT. 226, 15. — desid. überzusetzen verlangen: स बाङ्गभ्यो सागरमुत्तीर्णयितुं MBh. 5, 1878. — Vgl. उत्तरण, उत्तर fgg., उत्तीर्ण, डुत्तर.

— अत्र्युद् 1) überschreiten ÇĀT. Br. 13, 8, 4, 3. — 2) hindurchgelangen zu: शिवान्वयमुत्तरेमासि वाज्ञान् RV. 10, 33, 8.

— प्रौद् übersetzen, schiffen über: प्रोत्तार स वारिधिम् RĀGĀ-TAR. 3, 71.

— प्रत्युद् 1) wieder aus dem Wasser steigen: प्रत्युत्तीर्य R. GORR. 2, 111, 37 (SCHL. 103, 31: प्र० नदीतटात्). — 2) sich begeben zu: मन्दाकि-नीतीरं प्रत्युत्तीर्य R. 2, 103, 28.

— समुद् 1) aus dem Wasser steigen, herauskommen, hinaustreten: कृतोदकान् समुत्तीर्णान् JĀGĪ. 3, 7. जलात्समुत्तीर्य MBh. 1, 3283. समुत्तीर्णं (sc. विलात्) R. 4, 32, 26. वारुनात् aus dem Schiffe ÇĀT. 10, 135. — 2) glücklich herauskommen, sich retten aus, frei kommen von: यः कश्चि-न्निर्यात्समात्समुत्तरति MBh. 13, 6676. स च संसारत्समुत्तीर्णो ऽचिराद्-वेत् MĀK. P. 19, 34. त्रया धर्मसहायेन समुत्तीर्णो ऽयमापद्: KATHĀS. 24, 163. अस्माद्युद्धात्समुत्तीर्णान् MBh. 5, 5339. वनवाससमुत्तीर्णं R. GORR. 2, 25, 40. — 3) übersetzen, hinübergelangen über: नदान् BHATT. 6, 59. सैन्यार्णवं समुत्तीर्णो MBh. 7, 6490. सेतुमेतं समुत्तीर्य RĀGĀ-TAR. 3, 344. समुत्तीर्णं रथानीकं पाण्ड-वम् hindurchdringen durch, durchbrechen MBh. 7, 5219.

— उप स. उपतारक.

— नि niederwerfen, erniedrigen; überwinden, hemmen: न्यर्बुदस्य वि-ष्टयं वर्षायां बृकृतस्तिरः RV. 8, 32, 3. निदं निदं नि तारिषः 9, 79, 5. AV. 2, 31, 3. 6, 131, 1. ऋतं पिपत्यन्तं नि तारिषु RV. 1, 152, 3.

— निम् 1) herauskommen, sich retten aus, — von: कथं च निस्तरेमा-स्मात्कृच्छ्रात् MBh. 3, 15561. मरणान्निस्तीर्णं KATHĀS. 20, 21. — 2) über-setzen über, überschiffen: नावं निस्तीर्णकात्ताराः (श्वमन्यते) MBh. 5, 1054. निस्तीर्णः सरितां पतिः BHART. 3, 5. — 3) zu Ende bringen, durch-

leben (einen Zeitraum): निस्तरेदेकभक्तेन वैशाखं यो जितेन्द्रियः MBh. 13, 5155. vollführen, vollbringen, erfüllen: धीरस्तु निस्तरेत्सर्वम् VET. 4, 2. निस्तीर्णवाञ्छैव प्रतिज्ञाम् MBh. 7, 6452. 11, 399. निस्तीर्य समयम् R. GORR. 2, 74, 42. — 4) fertig werden mit, die Oberhand bekommen über, bemet-tern, besiegen, überwinden: त्रयोविंशतिरात्रं यो योधयामास भार्गवम् । न च रामेण निस्तीर्णः MBh. 12, 1566. निस्तरं डुस्तरम् BHĀG. P. 3, 18, 27. आपद्म् JĀGĪ. 3, 35. MBh. 1, 1822. 5754. 5, 4324. 13, 3353. सर्वान्विषमान् 3310. डुष्करम् 5, 209. दोक्दव्यधाम् RAGH. 3, 7. वनवासम् 14, 21. स नि-स्तरति डुगीणि गोपो ज्ञारद्वयं यथा fertig werden mit HIT. II, 110. वञ्चना या तु लब्धा मे तां त्वं निस्तर्तुमर्हसि fertig werden mit so v. a. dafür lei-den R. 2, 34, 37. निस्तीर्य ब्रह्मकेलनम् abbüssen Balā. P. 3, 16, 30. अभि-योगम् eine Beschuldigung niederschlagen, sich von ihr reinigen, die- selbe zurückweisen JĀGĪ. 2, 9. — caus. 1) retten, befreien: निस्तारयति डु-गीञ्च मरुतश्चैव किल्विषात् M. 3, 98. मातामहं परलोके निस्तारयति KULL. zu M. 9, 139. — 2) überwinden, besiegen: पूर्वं यो दितिज्ञो नराध्ववपुषा सि-हेन निस्तारितः Verz. d. Oxf. H. No. 213. — desid. zu durchschiffen —, hin-überzugelangen wünschen BHĀG. P. 1, 1, 22. — Vgl. निस्तरण, निस्तर.

— प्र 1) sich zu Wasser begeben, übersetzen: समुद्रं प्रतरति ÇĀT. Br. 12, 2, 1. तका वयं लवामहे शन्याः प्रतरतामिव KĀT. Ç. 13, 3, 21. आ-त्मानं कः समुद्ध्य काष्ठे बद्ध्वा मरुशिखाम् । समुद्रं प्रतरेदोर्भ्याम् MBh. 4, 1546. न हि पारं प्रपश्यामि डुःखस्यास्य — समुद्रस्येव मरुतो भुजा-द्यो प्र-तरन्तः 6, 2906. कैशिकी प्रतरिष्यति HARIV. 11201. R. 2, 83, 23. 53, 18. VARĀH. BRH. S. 2, 4. ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत् विद्वान्भ्रोतांसि सर्वाणि भयावहानि ÇVETĀÇV. UP. 2, 8. प्रतरस्व मरुगाधं बाङ्गभ्यो पुरुषोदधिम MBh. 5, 5572. 6, 4334. 12, 9051. जलं प्रतरमाणः 13, 4387. उदधीन्प्रतीर्णम् (यशः) über Meere gedrungen RAGH. ed. Calc. 6, 77 (v. l. चित्तीर्णम्). यथा प्रतीर्णया-मागच्छेत्स विकीयित wenn das Schiff abgefahren ist ÇĀT. Br. 2, 3, 2, 16. उत्तिष्ठत् प्र तरता सखायः brechet auf RV. 10, 33, 8. — 2) vorwärts kommen, emporkommen, zunehmen: प्र पूर्वाभिस्तरते देवयुर्जनः RV. 5, 48, 2. प्र सुशोसा मृतिभिस्तरिषीमहि 2, 23, 10. प्र सो अग्ने तवोतिभिस्तरते 8, 19, 30. — 3) vorwärtsbringen, leiten, führen; fördern; vermehren, vergrößern, erhöhen u. s. w.: प्रान्धं श्रेणं च तारिषत् RV. 10, 25, 11. अ-धनामधपते प्र मो तिर VS. 5, 33, 11, 83. संवत्सरो सर्वाणि भूतानि प्रतिर-ति ÇĀT. Br. 8, 4, 1, 13. प्र ये विशस्तिरत्त श्रेणमाणाः RV. 7, 7, 6. प्र ये वन्द्युं सूतताभिस्तरते 67, 9. प्र पां स्पार्काभिस्तरतिभिस्तरते 84, 3. यज्ञं प्र तिर 3, 17, 2. 40, 3. मनीषाम् 4, 6, 1. गिरः 10, 66, 10. शर्धः 6, 8, 7. त्रयम् 7, 39, 2. क्षेत्राम् 8, 90, 8. वीर्याणि AV. 13, 2, 32. प्र वाञ्छेभिस्तरत्त पुष्यसे नः RV. 7, 37, 5. VĀLAKH. 5, 6. प्र नामानि तिरधम् 7, 56, 14. यज्ञयतिम् VS. 5, 38. प्र स्वां मृतिमतिरच्छादानः RV. 1, 33, 13. प्रतरेच्च कुलं पुण्यम् MBh. 3, 8149. विभेत्यल्पश्रुताद्देदा मामयं प्रतरिष्यति ÇIVA-P. in Verz. d. Oxf. H. 65, a, 17. — 4) ausdehnen, verlängern; in Verb. mit dem acc. आ-युस् überaus häufig gebraucht: das Leben verlängern, länger leben las- sen; med. länger leben: प्रायुस्तारिष्ठम् RV. 1, 157, 4. 8, 18, 22. 10, 85, 19. TBh. 3, 1, 3, 9. प्र तार्यमे प्रतरं न आयुः RV. 4, 12, 6. प्र दीर्घेण वन्दनस्तार्या-युषो 1, 119, 6. 8, 48, 11. प्र तिरत्त आयुः 1, 125, 6. 10, 107, 2. — caus. 1) ausdehnen, ausbreiten: (भागीरथी) प्रतार्यमाणा कूटेषु MBh. 3, 8647. ver- längern: आयुर्वै नः प्रातीतरः AV. 11, 4, 6. AIT. Br. 6, 33. — 2) Jmd in die Irre leiten, anführen, betrogen: किं मो प्रतारयसि MĀKĪH. 82, 2. KATHĀS.